आदिवासी महिला लेखिकाओं के साहित्य में स्त्री विमर्श का तुलनात्मक अध्ययन

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"

हिंदी विषय में

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी

उपाधि हेतु

शोध–प्रारूप

शोध निर्देशक

डॉ0 चित्रा

शोधार्थी

निशा कुमारी

JVR- I/22/110041

हिंदी विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविघालय, जयपुर

(राजस्थान)

जून 2023

Scanned by TapScanner

क.स.	विषय
1.	शीर्षक
2	शोध प्रस्तावना
3	शोध कार्य का महत्व एंव आवश्यकता
4	प्रस्तुत शोध कार्य के उद्वेश्य
5	शोध परिकल्पना
6	शोध–प्रविधि
7	उपलब्ध साहित्य की समीक्षा / पुनरावलेकन
8	शोध कार्य की प्रस्तावित अध्याय योजना
9	संदर्भ ग्रंथ सूचीं

Scanned by TapScanner

❖प्रस्तावना

“प्रकृति के सेवक और परम्पराओं के संरक्षक है आदिवासी नाम में ही सार छिपा वे है आदिकाल के निवासी।”

'आदि + वासी' दो शब्दों का जोड़ है जिससे तात्पर्य है मूल निवासी पुराने लेखो में आदिवासियों को 'अत्विका' नाम से पुकारा गया है। मोहनदास कर्मचंद गांधी ने इन्हें 'गिरिजा' (पहाड़ पर वास करने वाले लोग) कह कर पुकारा है। भारतीय संविधान में 'अनुसूचित जनजातियों' के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। भारत के प्रमुख आदिवासी समुदायों के नाम – धानका, खडिया, कोली, लोहरा, पारधी, कोल, गोड़, भील, मुड़ा, मीणा, बैगा, सहरिया, परधान आदि है। ''अनेकता में एकता''' भारतीय संस्कृति की अस्मिता हैं और इसी आधार से भारत के विभिन्न प्रदेशों में स्थित जनजातियाँ हैं। जो विभिन्न स्थानों पर रहते हुए अपनी संस्कृति के दाव्रा भारतीय संस्कृति को एक 'अद्वितीय पहचान' देती है।

आज की आधुनिक उपभोक्ता संस्कृति ने आदिवासी समुदाय को प्रभावित किया है। आदिवासी समुदाय का अधिकतर सम्पर्क बाहरी संसार से सीमित है। अतः भारत सरकार द्वारा आदिवासी समुदाय को मुख्य आधुनिक धारा के साथ चलाने का प्रयास किया जा रहा है। आदिवासी विकास को साकार करने के लिए आदिवासी को राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से अधिक जागरूक और संगठित किये जाने की आवश्यकता है इसलिए शिक्षा सामाजिक – आर्थिक गतिशीलता का महत्वपूर्ण तत्व है। इनके समुदाय के विकास एंव उत्थान के लिए शिक्षा को एक साधन के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। नयी शिक्षा प्रणाली से आदिवासी समुदाय अब आधुनिकता की ओर बढ़ रहे है।

भारतीय आदिवासी महिलायें, जिन्हें आदिवासी समाज में पुरूष समकक्षों से कम नहीं माना जाता। ये महिलायें, आादिवासयों की कुल आबादी का लगभग आधा भाग है। आधुनिकीकरण की नइ धारा में ये आदिवासी महिलायें, अपनी भाषा, पहनावे, संसाधनों एंव रीति–रिवाजों को पारंपरिक रूप से संरक्षित किये हुये है। आदिवासी महिलायें, ग्रामीण विकास में भी मुख्य भागीदारी का अंग मानी गयी है। ये महिलायें, भोजन एकत्र करने, पहाड़ – पत्थर तोड़ने, टोकरी बुनाई, मछली पालन, हस्तकला, गायन एंव नृत्य इादि कार्य में भागीदार रहती है। अतः आदिवासी महिलायें आर्थिक , सामाजिक एंव सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण सहभागिता करती रही है।

''जब भी स्रब का बाण टूटे तो सब पर भारी नारी। फूल जैसी कोमल नारी, काँटों जितनी कठोर नारी।''

किंतु आज भी आदिवासी महिलायें आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक एंव सामाजिक रूप से पिछड़ी हुई है। इस पहलू पर प्रकाश डालेते हुए आदिवासी महिला लेखिकाओं ने अपनी कलम की ताकत से उन पिछड़ेपन की समस्याओं को अपनी

Scanned by TapScanner

लेखन – रचना द्वारा समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। जिससे आदिवासी महिलाओं की शिक्षा, प्रतिष्ठा, सवास्थ्य एंव उनके मनोबल में वृद्धि होगी। क्योंकि आदिवासी महिलायें भी समाज व देश का एक आवश्यक और अभिन्न भाग है।

स्त्री विमर्श का प्रमुख विचार है स्त्री के संघर्ष, उसके महिला लेखिकाओं ने अपनी जुबानी प्रस्तुत किया है क्योकि वह आदिवासी समुदाय से संबंध रखती है उनकी जुबानी स्त्री–विमर्श आदिवासी महिलाओं के जीवन का एक प्रत्यक्ष आईना प्रस्तुत करता है। क्योंकि उन्होने वह आदिवासी वातावरण , संस्कृति, आत्मसंघर्ष आदि स्वंय भी देखा व अनुभव किया है। अतः ये आदिवासी महिला लेखिकायें स्वंय आदिवासी समुदाय में स्त्री जीवन की जीवंत साक्षी उदाहरण है। स्त्री की आज़ादी के लिए एक प्रयास। ये स्त्री के प्रति होने वाले शोषण के विरूद्ध आत्मसंघर्ष की लड़ाई है। जिससे आदिवासी स्त्री की दयनीय स्थिति का पता हमारे समाज तक पहुंच सकें। उनका समाधान हो सकें। क्योंकि स्त्री के उत्थान के बिना किसी भी देश या समाज की प्रगति के बारे में सोचना व्यर्थ है।

हमारी आदिवासी महिलायें लेखिकाऐं **''बंदना टेटे''** और **''रोज केरकेट्टा''** ने आदिवासी स्त्री–विमर्श विषय पर रचनाएँ लिखी ताकि समाज में आदिवासी स्त्री की अस्मिता को पुनः स्थापना हेतु प्रयास किया जाये। ये दोनों ही पुरानी रीतियों को तोडकर नये समय के अनुसार आदिवासी स्त्री को सम्मान व मानवीय संवेदना को महत्व देते हुए व्यक्तिगत जीवन में अच्छाइयों का एक नया आयाम देने का प्रयत्न किया है।

❖शोध कार्य का महत्व एंव आवश्यकता

शिक्षा एंव आजादी के अभाव के कारण नारी की स्थिति अत्यन्त हेय एंव उपेक्षित बन गयी है। वर्तमान युग में शिक्षा के प्रचार–प्रसार से नारी के जीवन के सभी क्षेंत्रो में सहभागिता एंव सक्रियता दिखाई देने लगी। नारी भारतीय समाज का अभिन्न एंव अनमोल अंग है। इस विचार धारा से इस विषय का शोध अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। आदिवासी महिलाओं के स्त्री–विमर्श विचार धारा को आदिवासी महिला लेंखिकाओं के द्वारा साहित्य में नारी चेतना लाना। क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही नारी जीवन में अपनी अस्मिता और अधिकार शक्ति के प्रति जागरूक हुई।

अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि आदिवासी समुदाय स्तर पर स्त्री–विमर्श अध्ययन करना जिससे नारी को देश–समाज के अन्य क्षेत्रों से सम्पर्क जोड़ा जाये, जिससे वह अपनेपन का अहसास कर सकें। नारी अपनी पहचान स्थापित करने के लिए प्रेरित हो। ताकि समाज में अपनी भूमिका व योगदान को समझने में मदद पा सकें।

1. आदिवासी समुदाय की महिलाओं को समाज में नई दिशा एंव गति प्रदान करने में सहायक।

2 आदिवासी समुदाय के सर्वाभौमिक कल्याण के लिये।

3 स्त्री–समुदाय की सामाजिक कुप्रथाओं और रीतियों को शोध द्वारा अवगत करने में सहायक।

Scanned by TapScanner

4 शिक्षित समाज एंव आदिवासी समाज में संतुलित एंव विकास में सहायक।

5 आदिवासी महिला की भूमिका का समाज में अहम भागीदारी को समझने में सहायक।

6 आदिवासी महिलाओं में 'नारी चेतना' को गति प्रदान करना है।

7 शिक्षा के द्वारा आदिवासी महिलाओं में ज्ञान की उत्पत्ति में अत्यन्त सहायक है।

8 आदिवासी महिलाओं की दशा को सुधारने एंव उन्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे लाने के लिए सतत्र प्रयास करना।

9 आदिवासी महिलाओं के अधिकारों व सम्मान के लिए शोध अध्ययन का महत्व है।

0 आदिवासी महिलाओं की समस्या, समाधान व सुझाव वर्तमान समाज तक दिखाने के लिए सहायक है।

❖शोध कार्य का उदेश्यः

1. आदिवासी महिलाओं में अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक कराना।
2. आदिवासी महिलाओं को उत्पीड़न एंव शोषण से आजाद कराना।
3. वंदना टेटे के साहित्य दर्शन द्वारा आदिवासी समुदाय में स्त्री–विमर्श का अध्ययन करना।
4. रोज केरकेट्टा के साहित्य दर्शन द्वारा स्त्री–विमर्श का अध्ययन।
5. रोज कोकेट्टा व वंदना टेटे के साहित्य में स्त्री का सघर्षशील विद्रोही स्वर।
6. रोज केरकेट्टा व वंदना टेटे के उपन्यासों में आदिवासी महिलाओं का आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक पक्षों अध्ययन

❖शोध कार्य की परिकल्पनाएँ

वर्तमान समय में आदिवासी महिला लेखिकाओं के द्वारा स्त्री–विमर्श की जानकारी च वास्तविकता का पता लगाने के लिऐ ये तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी व सार्थक है। आदिवासी महिला स्वंय एक आदिवासी समुदाय से सम्बधित है। प्रत्येक पहलू को बारीकि से उजागर करने में सहायक है। दोनों आदिवासी महिला लेखिकाओं के साहित्य लेखन का प्रयोग कर स्त्री को समाज में जो निहित कुरीतियां, अंधविश्वास, मानवीय तत्वों के विघटन एंव क्रूरता की जो छवि है। उसे प्रकाश में लाये जाने का प्रयास किया जायेगा। वंदना टेटे ने अपने सभी कृतियों में आदिवासी समुदाय समस्या, स्त्री–पीड़ा, सामाजिक पिछड़ापन, मानसिक एंव आर्थिक दृष्टि से स्त्री यन्त्रणा पर लेखन किया है। और समाज को अवगत करवाया उससे।

Scanned by TapScanner

रोज केरकेट्टा भी एक आदिवासी महिला होते हुऐ दूसरी आदिवासी महिला की पीड़ा को मूकदर्शक न बनकर उसे अपनी लेखन रचना का आधार बनाया। समाज में आदिवासी महिलाओं को सम्मान व अपनी अस्मिता की अभिव्यक्ति का स्त्री–विमर्श का तुलनात्मक अध्ययन मेरे शोध अध्ययन का एक सार्थक व सशक्त कार्य है।

❖शोध के लिए प्रस्तावित विधि

1. प्रस्तावित शोध में दोनों आदिवासी महिलाओं की रचनाओं व कृतियों का साहित्य विधा का अध्ययन किया जायेगा। जिसमें आदिवासी समुदाय व स्त्री का विवरणात्मक अभिव्यक्ति का गहन अध्ययन किया जायेगा।

2 आदिवासी महिलाओं के स्त्री पक्ष व विपक्ष तत्वों को समझकर उनका वर्तमान समाज के समक्ष अध्ययन करना।

3 प्रत्येक कृति व रचना में स्त्री से संबधित कार्यो का वंदना टेटे एवं रोज केरकेट्टा के दृष्टिकोण से तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा।

4 शोध के लिए आदिवासी महिलाओं की समस्या व जीवन दर्शन से संबधित सहायक ग्रंथो से सामग्री प्राप्त का जायेगी।

5 आदिवासी महिलाओं के द्वारा लिखित पुस्तकों, लेखों, दस्तावेजों और रिपोर्ट अन्य स्रोतो की सहायता से ''सामग्री विश्लेषण'' विधि द्वारा अध्ययन किया जायेगा।

6 वंदना टेटे एवं रोज केरकेट्टा के साहित्य और उनके अध्ययन से प्राप्त स्त्री के निष्कर्ष तथ्य इस शोध के प्रमुख आधार विमर्श रहेंगे।

❖उपलब्ध साहित्य की समीक्षा

आदिवासी महिलाओं की हिंदी कथा साहित्य में बहुत सीमित मात्रा में साहित्य उपलब्ध है। प्रस्तावित अध्ययन स्त्री–विमर्श आदिवासी महिला विषम की दृष्टि से बिल्कुल नवीन है। और इस विषय को लेकर हिंदी साहित्य में आदिवासी महिला लेखिकाओं का उपलब्ध रचनाएं आज के नारी समाज में एक नई चेतना एंव जागरूता का प्रचार–प्रसार करती है। स्त्री–विमर्श संबधित कहानियां पत्र–पत्रिकाओं, निबंध एंव उपन्यास लेख जिनका उद्धेश्य स्त्री–अस्मिता को विकसित करना है। अतः स्त्री–विमर्श के विभ्न्नि आयामों को समाज के समक्ष लाने के उदेश्य से आदिवासी महिलाओं लेखिका के अपने– अपने विचार इस प्रकार से है।

Scanned by TapScanner

❖एलिस एक्का

एलिस एक्का पहली महिला आदिवासी कहानीकार थी हिंदी कथा साहित्य में। ये मुंडा आदिवासी समुदाय से है। इनकी अनेक कहानियां 1947 रांची से प्रकाशित ''आदिवासी'' पत्रिका में छपी थी। इनकी पत्रिका में छपी ''दुर्गा के बच्चे और एल्मा की कल्पनाएं भारत की पहली दलित हिंदी कहानी है। ये जनवरी 1962 में 'आदिवासी' पत्रिका में छपी थी। इस कहानी में दो महिला पात्र केन्द्रित भूमिका में है। एक आदिवासी और दूसरी दलित दोनों एक–दूसरे के जीवन में ताकझांक की कोशिश करती है। दोनो के स्त्री शोषण व मौन स्त्री कुठां मन का चित्रण किया है। 'वनकन्या' इस कहानी में आदिवासी कन्याएं शिकार हुए एक युवक का उपचार करती है।

आदिवासी कन्या 'फेचो'उस शहरी युवक से प्रेम करने लग जाती हे पर 'फेचो' अपनी जमीन–जंगल को छोडकर उस शहरी युवक के साथ नहीं जाना जाती।

'कोयल की लाडली सुमरी ' इस कहानी में पंद्रह साल की आदिवासी लडकी सुमरी का वर्णन है जो हंसमुख, अल्हड़, जंगल की प्रकृति प्रेमी है। जो बलात्कार का शिकार हो जाती हो आदिवासी समाज के लोग उसे ही दोषी मानते है। उसे और उसके पेट में पनपन रहे बच्चे को जीने नहीं देना चाहते अतः सुमरी इस द्वंद्व से घिरी हाहाकार करती कोयल नदी की तूफानी लहरों में अपना जीवन त्याग कर देती है।

एलिस एक्का की कहानियां प्रकृति और स्त्री को केंद्र में रखकर लिखी गई है।

❖निर्मला पुतुल

निर्मला पुतुल आदिवासी लेखिका जो ग्रामीण, पिछली, दलित, आदिवासी महिलाओं के बीच शिक्षा एंव जागरूकता के प्रसार के लिए विशेष प्रयासरत रही है। ''आदिवासी स्त्रियाँ'' कविता द्वारा उन्होनें आदिवासी स्त्री की धूमिल अस्मिता, पुरूष व्यवस्था और पितृसृत्तात्मकता के प्रति विद्रोह आदिवासी समाज और आदिवासी स्त्री का वेदना, आदिवासी समाज व्यवस्था के गुणदोष, तथा कथित शहरी समाज पर व्यंग्य, मुक्ति कामना जैसे बिंदुओ के आधार पर रचना की है।

❖रोज केरकेट्टा

रोज खडिया आदिवासी समुदाय से संबंधित है। इन्होंने अपने कथा संग्रह 'पगहा जोरी– जोरी रे घाटों ' में आदिवासी जीवन को संघनता और सम्पूर्णता के साथ दिखाया है। राज की कहानियां आदिवासी स्त्री विमर्श की कहानियां है। जिसमें स्त्री – विमर्श को जंगल, जल, जमीन के सदंर्भ में स्त्री जीवन का पाठ प्रस्तुत किया।

Scanned by TapScanner

❖सुशीला सामद

सुशीला सामद हिंदी की पहली भारतीय आदिवासी कवयित्री/संपादक/पत्रकार और स्वंतत्रता आंदोलनकारी थी। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से आदिवासी समुदाय सामाजिक–सांस्कृतिक,साहित्यिक दायित्वों का निर्वाह भी सुसंगठित तरीके से किया। इनके दो प्रमुख काव्य संग्रह 'प्रलाप'(1935 में) और 'सपने का संसार' (1948 में) इनकी रचनाओं में भी आदिवासी स्त्री – विमर्श स्त्री अस्मिता एंव आदिवासी स्त्री संग्राम में शमिल होने वाली स्वंतत्रता आंदोलनकारी भी थी।

❖वंदना टेटे

वंदना टेटे भारतीय आदिवासी लेखिका जिन्होंने अपनी साहित्य रचना के द्वारा आदिवासी समुदाय के जीवनदर्शन एंव आदिवासी स्त्री विमर्श को नया आवेग प्रदान किया। इनके अनुसार आदिवासी साहित्य 'रचाव और बचाव' का साहित्य है। इनके अनुसार एक आदिवासी साहित्य स्ंवय एक आदिवासी समुदाय का आदिवासी ही लिख सकता है। क्योंकि एक आदिवासी ही अपने लेखन में आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व के संघर्ष को अपना मुख्य हाथियार बनाया है। इनकी प्रकाशित पुस्तकें 'किसका राज हैं' जिसमें आदिवासी स्त्री मुदों पर वैचारिक लेखन किया गया है। 'कवि मन जनी मन' ये आदिवासी स्त्री कविंताए लिखी गई। इनकी अन्य रचनाएं ''लोकप्रिय आदिवासी कहानियां' 'आदिवासी दर्शन कथाएं' 'आदिय राग' 'पुरखा लड़ाके' आदि। वंदना ने झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति का नेतृत्व करते हुए झारखंडी भाषा संस्कृति उसकी अस्मिता को नया रूप दिया है।

❖शोधकार्य की प्रस्तावित अध्याय योजना

- **प्रथम अध्याय –** स्त्री विमर्श : (अवधारणा, अर्थ, क्षेत्र और तात्पर्य)
- **द्रितीय अध्याय –** आदिवासी साहित्य में स्त्री विमर्श की अवधारणा
- **तृतीय अध्याय –** वंदना टेटे एवं रोज केरकेट्टा का व्यक्तित्व एंव कृतित्व
- **चतुर्थ अध्याय –** वंदना टेटे के स्त्री–विमर्श संबंधित रचनाओं का कथा–विन्यास

Scanned by TapScanner

- **पंचम अध्याय –** रोज केरकेट्टा की रचनाओं का आदिवासी संसार
- **षष्ठ अध्याय –** वंदना टेटे एवं रोज केरकेट्टा की रचना–कृतियों में चित्रित स्त्री–विमर्श
- **उपसंहार**
- **संदर्भ एंव सहायक ग्रंथ सूची**

❖सन्दर्भ ग्रंथ

1. महिलाओं के अधिकारों की रक्षा जरूरीः वंदना टेटे
2. कानून की जानकारी से दूर होगी महिला हिंसाः वंदना टेटे
3. पुरखा झांरखडी साहित्यकार और नये साक्षात्कारः वंदना टेटे
4. आदिवासी साहित्यः स्वरूप, चुनौतियां और संभावनाएं
5. वंदना टेटे, एलिस एक्का की कहानियां, राधाकृष्ण (राजकमल प्रकाशन) नई दिल्ली 2015 पृष्ठ 28
6. एलिस एक्का की कहानियां, और आदिवासी दर्शन और साहित्य पुस्तकों का लोकर्पण
7. स्त्री महागाथा की महज एक पंक्ति (रोज केरकेट्टा 6 निंबध)
8. आदिवासी दर्शन कथाएं 6 वंदना टेटे
9. लोकप्रिय आदिवासी कहानियां ˙ 6 वंदना टेटे
10. कवि मन जनी मन (आदिवासी स्त्री कविंता) 6 वंदना टेटे
11. प्रलाप (1935)ः सुशील सामद (काव्य संग्रह)
12. सपने का संसार (1948)ः सुशील सामद (काव्य संग्रह)
13. पगह जोरी–जोरी रे घाटो (हिंदी कहानी संग्रह) : रोज केरकेट्टा
14. ''आदिवासी स्त्रियाँ'' (कविंता) : निर्मला पुतुल
15. आदिवासी हिंदी कविंताए की रचयिताः ग्रेस कुचूर (आदिवासी कवयित्री)
16. आशा रानी व्होरा भारतीय नारीः दशा और दिशा, नेशनल पब्लिशर्स
17. नीरा देसाई भारतीय समाज में नारी, नेशनल बुक ट्रस्ट
18. डॉ0 सुदेश बत्ता नारी अस्मिता हिंदी उपन्यासों में, रचना प्रकाशन

Scanned by TapScanner

19. स्त्री उपेक्षिता : पोकेट बुक्स दिल्ली, 1990

20. डॉ0 सुशील वर्मा आधुनिक समाज की नारी चेतना, हिंदी बुक सेंटर

21. स्त्री पक्षः जनसत्ता सबरंग 1999

22. उपनिवेश में स्त्रीः राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2003

23. यादव मंजू ''वर्तमान स्त्री का सच''

24. डॉ0 घोरपड़े छाया देवी नारी जीवन मूल्य कानपुर, विघा प्रकाशन

25. श्री चिंरपीलाल पाराशर, 'नारी और समाज नेशल पब्लिशर्स

26. डॉ0 तिवारी कामिनी प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श कानपुर, विघा प्रकाशन

27. अंसारी, एम0 ए0, नारी चेतना और अपराध पंचशील प्रकाशन, जयपुर 1989

28. अनामिका, स्त्री का मानचित्र, सांराश प्रकाशन प्रा0, लि0, दिल्ली, 1999

29. बंसल नारायण– भारतीय नारी, इंडियन बुक कंपनी, नई दिल्ली।

30. राधाकुमार, स्त्री संघर्ष का इतिहास, 1800–1900

वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्कार 2004

Scanned by TapScanner